SWAMI VIVEKANANDA MAHILA MAHAVIDHYALAYA, ROOPANGARH

FACULTY NAME :	**MS. FARAH**
COURSE :	**BA I YEAR**
SUBJECT :	**POLITICAL SCIENCE**
PAPER :	**2**
UNIT :	**II**
SESSION NAME :	**PANDITA RAMABAI**

पंडिता रमाबाई (1858-1922)

पूरा नाम	पंडिता रमाबाई मेधावी
जन्म	23 अप्रैल, 1858 ई.
जन्म भूमि	मैसूर
मृत्यु	5 अप्रैल, 1922 ई.
मृत्यु स्थान	महाराष्ट्र
अभिभावक	'अनंत शास्त्री'
कर्म भूमि	भारत
कर्म-क्षेत्र	समाज सुधारक
भाषा	मराठी, कन्नड़, हिन्दी और बंगला
पुरस्कार-उपाधि	'सरस्वती', 'पंडिता' और "कैसर-ए-हिंदी"
नागरिकता	भारतीय

पंडिता रमाबाई (1858-1922)

पंडिता रमाबाई शायद आधुनिक भारतीय इतिहास की पहली नारीवादियों में से एक हैं जिन्होंने भारतीय महिलाओं की मुक्ति के लिए संघर्ष किया। उनके राजनीतिक विचार पितृसत्ता की आलोचना और नागरिक अधिकारों और लैंगिक न्याय की मांग में परिलक्षित होते हैं। इस प्रकार, वह एक उदार नारीवादी और समाज सुधारक थीं। **पंडिता रमाबाई** जाति व्यवस्था के साथ-साथ भारतीय समाज में महिलाओं की निम्न स्थिति का भी विरोध करती हैं। अपने पूरे जीवन में, उन्होंने महिलाओं के उत्थान के लिए काम किया।

पंडिता रमाबाई (1858-1922)

- 23 अप्रैल, 1858 में मैसूर के एक साधारण से परिवार में जन्मीं रमाबाई के पिता का नाम अनंत शास्त्री था, जो कि संस्कृत के परम विद्धान थे और महिला शिक्षा के घोर समर्थक थे, हालांकि उन्हें इसकी वजह से काफी विरोध भी सहना पड़ा था।
- रमाबाई ने अपने पिता से ही संस्कृत की शिक्षा ली थी। पंडिता रमाबाई बचपन से ही बेहद बुद्धिमान और आसाधारण प्रतिभा वाली महिला थीं। सिर्फ 12 साल की छोटी सी ही उम्र में ही उन्हें संस्कृत के करीब 20 हजार श्लोक याद हो गए थे।
- साल 1877 में अकाल के कारण माता-पिता और उनकी छोटी बहन की मौत हो गई थी, जिसके बाद रमाबाई अपने भाई के साथ कलकत्ता चली गईं थी, वहीं साल 1880 में रमाबाई के सिर से उनके भाई का साया भी उठ गया।
- हालांकि, रमाबाई कमजोर नहीं पड़ी और इसके बाद उन्होंने 22 साल की उम्र में प्रख्यात वकील बिपिन बिहारी मेधवी से शादी कर ली।

पंडिता रमाबाई (1858-1922)

रचनाएं

- The High Cast Hindu Women (1887)
- ए टेस्टीमनी (1917)
- स्त्री धर्मनीति (1882)
- वायेज टू इंग्लैंड (1883)
- फेमाइन एक्सपीरिएंस इन इंडिया (1890)
- द न्यू टेस्टामेंट (1924)
- द लाइफ ऑफ द क्राइस्ट (1924)
- हिस्ट्री ऑफ द ब्रह्मे-समाज
- अर्ली लाइफ स्टोरी एंड ट्रेवल्स इन इंडिया
- पीपल्स ऑफ द यूनाइटेड स्टेट्स
- राइज एंड फॉल ऑफ द आर्यन रेस

पंडिता रमाबाई (1858-1922)

- महान समाज सुधारक और कवियित्री रमाबाई को अपने बचपन में ब्राह्मणवादी पितृसत्ता के लिए काफी कुछ सहना पड़ा था, इसलिए उन्होंने इस पर अपनी एक किताब 'द हाई कास्ट हिंदू वूमेन' भी लिखी थी।
- इस किताब में उन्होंने विधवा विवाह, सती प्रथा, बाल विवाह समेत हिन्दू महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचारों के बारे में लिखा था।
- विधवाओं के हक के लिए लड़ने वाली रमाबाई ने भारत लौटने के बाद साल 1889 में विधवाओं के लिए शारदा सदन की स्थापना की, वहीं इसके बाद कृपा सदन नामक एक और महिला आश्रम बनाया गया। जिसमें अनाथ, असहाय और पीड़ित महिलाओं को शिक्षा दी जाती हैं ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

पंडिता रमाबाई (1858-1922)

रमाबाई वास्तव में एक उल्लेखनीय महिला थी जिन्होंने महिलाओं की शिक्षा का बीड़ा उठाया और महिलाओं के अधिकारों और सशक्तीकरण के लिए विद्रोह किया।रमाबाई ने **जाति को हिंदू समाज में** एक महान दोष और लोकतांत्रिक भावना के विकास में एक रुकावट के रूप में देखा। साथ ही उस समय पर एक उच्च जाति की ब्रह्मण परिवार से होकर शूद्र जाति में अंतरजातीय विवाह करने के कारण भी उनकी काफी आलोचना हुई हालांकि इस कार्य को ज्योतिबा फुले तथा उनकी पत्नी सरस्वती फुले का सहयोग प्राप्त हुआ। धर्म परिवर्तन करने पर भी उनकी काफी आलोचना की गई पर उन्होंने अपना काम जारी रखा। भारत सरकार ने भी रमाबाई के नाम पर एक डाक टिकट जारी किया था तथा उनका बनाया मुक्ति मिशन आज भी सक्रिय है। पर फिर भी लगता है कि रमाबाई को भारत में वह पहचान नहीं मिली है जो उनके समकालीन समाज सुधारकों को दी गई पर ये बात कोई नकार नहीं सकता की वह भारत की सबसे प्रमुख नारीवादी समाज सुधारकों में से एक थी।

THANK YOU